

॥ मगपय्या नमस्कारक सनी वात्ता
 ॥ लांग म्या जे श्री पुत्त प संग म हात्मा
 ॥ वर श्री स प सान की शरीरी काय म
 ॥ चन आह ते सा गण ॥ आगर म स्तक
 ॥ श्री चे दु सु ला ग के तरी जा ॥ व ज फल
 ॥ फीरं ॥ आगर श्री चे शरीरी क प
 ॥ स लानरी जा पा च जे फुले वारा के तले
 ॥ २५ श्री चे छ ते दु सु ल ग की तर जा ग
 ॥ व जे फुल ग मी थिर की ॥ २५ कं वर दु सु
 ॥ ल ग की तर जा ॥ व जे भा र च ठ के ॥
 ॥ अंग शरीर की म प दु सु ल तन स ले तर
 ॥ जा पा वे की य या ची व अ श्री ची लांग
 ॥ व गे अ हे ते गे कर म सं त त हो त ना ही ॥
 ॥ य व र सु ले भा न बो ली ले की या स उ पा
 ॥ क काय करी वा ते सा गण ॥ म ग प य्या
 ॥ नो पृथ क पृथ क लो डि नि पौ श व सं गी व
 ॥ जो ह पा हु नी उ पाय क म ग स व ती हो डि ॥

॥ या गंगे फुल फीरले या सया राधे ॥ सर
॥ रंक्षामा मगत्र को बडों चा फीता य कत्र
॥ करुन वीदा का चेती नदी वसांतर ती
॥ नदी वस का पुंस या ओ राधी वनी ज
॥ उन फाया यो नीत टेंवा वा ॥ या व ॥ पुरा
॥ स गजा की या स पुनरा ल हा उन की
॥ यि संभव हा उन स तती हा इतं ॥ १५
॥ अ गंगे फुलें चारा चेत गंगे सया राधे
॥ हा गल्ले सचा गका दोन दी सितो का
॥ वजन ती कळे तें ती व खलुन हा गंगे
॥ शुक्क करुन का पसा चा फाया भी
॥ जवी जे ॥ खु गेली या स तो फाया थोनी
॥ तरे वोजे ती नदी वस आधवा पाचरी
॥ च सट वी जे ॥ तं स्नंतर जे वी नी दी

॥ स्त्री पुरुष ये कत्र हो रीजे गर्भिरं १५५

॥ हो रीजे ॥ आगं रभा फुटा वं र मा र

॥ च ठ लें हा सें मी रंध ॥ पां ठ रीजे

॥ रे वं हती चा सुर दोही ये कत्र बा

॥ री कं वं रत्र गा ठ क रन सर सें न

॥ पां ते का ते का लं वी जें रं तु का

॥ वी ती न दी वं स फा य ॥ री जं न

॥ ये नी तं टे वी जें ते ॥ क रन मा र उ त

॥ रं क ॥ म ग स्त्री पुरुष र मी जें गर्भ

॥ सं भं वं ह उ न पर म रं सें तो न दे री

॥ आ ग र फु ट ॥ वं र की उ प ड ती सां स

॥ ओ पं ध सा वं न व ही र डा व आ स रं

॥ र व वं ह हू णा च रा व र व ज न चें

॥ नं पा पी यां त वे ग का ली वा ठा

॥ च पा नी स म भा गे च । कु न य क
॥ त्र करी जे य त फा या । जी जं उ न र
॥ तु क । की सै व टी ती । राज यो नी
॥ त ट चं गे ॥ की डा म रे ल म ग थो ग
(3) ॥ च उ त्ता च र स नै सं ॥ य हो उ न र
॥ ताने डा इ ल ई श्व र लं पा क री त ॥ ५५
॥ ज्य ग र फु ले म र मो चेत ली सा स
॥ ज्यो ष ध गु ल व खा ली स वै दं
॥ ठी बा चं दा य मा चै पा नी च क
॥ रा चै त त्क र स म भा गे च उ न स्या त
॥ फा या भी ज व ने पु र्वा री च्या सं ।
॥ गी त त्सा अ प्रा णे क र ने पर मे श्व रे
॥ ह्नु पं न सं त तो डा इ ल ॥ ५५

॥ अगारं फुलें सरदी वेलती ॥ ५ ॥
॥ सें ओषध कं ॥ अ बचें नांगा
॥ चौ मुळी चार सात फाया बीज
॥ ३९ ॥ उनी स्तुजा हाती या वरती सरें
॥ दीवसी पूर्वती हीती या प्रमाणे
॥ करावें सगळो गंगावा ॥ परमं
॥ अरक्षुपन सें तली हा इत ॥ ४५ ॥
॥ आगर स्त्री सें काही व सोडीन
॥ सला सें लान हातना ही या संपरी
॥ चीलांग वडें जाणाची ह्या सवीला
॥ जकी ॥ येकता रित कागदा वरक
॥ सुरी व केशं येक करनं टेहा वें पा
॥ कहो गुन च वधे दिवं सीता रित उज

(५)
॥ व्यादिडा वंरु ये ~~क~~ ~~सि~~ ~~न~~ बा धु न पु
॥ रु चा सी जोग आ वा से त ली डा
॥ इ उ त र ता व र आ र ची आ य तें मां
॥ हे त ले त के डा वी ॥ ५

~~माळजाळ माळ~~
~~घरमाळ~~

~~राडा~~

~~मारापारप~~



(4A)

॥ श्री ॥

॥ प्रती मे चो दे वरे सा ज्या चा भाव ॥

॥ लोकाय निवार्ह करे ल आत्मा ॥

॥ १ ॥ सवा ल ओं तरी नां हुता श्री

॥ हरी ॥ संपुष्टा मा सा री लृणती

॥ देव ॥ २ ॥ दार का पं छरी जे न या

॥ ना करी ॥ बर का य मा सा री प उ

॥ ले को री ॥ ३ ॥ सु हो त्री पुं ण्य जे न्य

॥ क्ष त्री पाप ॥ अ भी न व से क ल

॥ क ल ने या ॥ ४ ॥ लृ जे पां गा व

॥ टे स्वर स की तु ती ई श्वर ॥ हा

॥ जा ने नि धी र वि र ल को णी

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

(5)

॥ जको मा सीरे सीपु दी ॥ मज
॥ चाली तु जमधी ॥ आवज तो
॥ विधी ॥ नीवे धीव पां गली ॥
॥ १ ॥ तु स्यामी श्री शवक ॥ उंच
॥ निच पदवी येक ॥ ऐरे से हेको
॥ तुक ॥ नको करु खंडना ॥
॥ रल शो भले कांडने ॥ आ
॥ ककारी तीर वे सोणे ॥ अक
॥ आसता तेणें दुजे के विजाणा
॥ वे ॥ ३ ॥ ज के नखा तीज का
॥ ब्रह्म आली या फका ॥ भो
॥ भी लानि राका ॥ तिणे गो डि
॥ नीवडली ॥ ४ ॥ तु स्या स्या

SA

॥ ये सुख बाटे ॥ सा ते ब्याजा
 ॥ चान्हा लोटे ॥ ये कये का भेदे ॥
 ॥ कोण सुख ते का ये ॥ ५ ॥ लुका
 ॥ लपणे होव ॥ हे धीमानी मा सु
 ॥ चीत ॥ नवे जा ता सुत ॥ ६ ॥
 ॥ खा के ला विचार ॥ ७ ॥
 ॥ लुकारा म ॥
 ॥ पदोपदिपाया प्रउणे ॥ करणा जा
 ॥ णभा का वि ॥ ८ ॥ ये रे ये रे वि सा व
 ॥ यां ॥ करणा दया सागरा ॥ ९ ॥ जो
 ॥ दुनिया कर कमळ ॥ नेत्रि जळ
 ॥ भरो नि ॥ लुका करि मनोरथ ॥ १० ॥
 ॥ रवि अर्थ विठोबा ॥ ११ ॥ ५५

॥ धर्म रक्षा वया सादि ॥ करणो जाति
॥ आंसासी ॥ १५ ॥ वाचा बोले वेद
॥ निती ॥ करूं संतिके लिते ॥ ३॥ नवा
॥ णता स्थीति आंगि ॥ कर्म या गीते
॥ लेंडा ॥ ३॥ तुका मणे आधम हासी ॥
॥ भक्ति दूर हरिची ॥ ३॥ २॥ २५ ॥
॥ कांथा सादि जाले श्चाने ॥ तणे
॥ जन भोंदिले ॥ १॥ काम क्रोध पो
॥ टिबुच बुचि ॥ पुके पुचि च्यालि
॥ ची ॥ २॥ पुजे सादि द्रव्य मागे ॥
॥ काय सांगे सिष्यासि ॥ ३॥ तुका म
॥ पो केचे ब्रह्म ॥ अवधा भ्रम विश
॥ याचा ॥ ३॥ २५ ॥ २५ ॥

(८९)

- ॥ नकोजातां पुसों काहिं ॥ लवला
॥ हिउसंति ॥ ९ ॥ जायवे गेपंठर पुसा ॥
॥ तोसोई रादिनाचा ॥ १० ॥ वचनाचा
॥ करि गोवा ॥ रिखां देवा शरण ॥ ११ ॥
॥ तुकासणे कपावंता ॥ बहुचिंता
॥ दिनाची ॥ १२ ॥ १३ ॥
॥ रामसुखारामसुख ॥ मोक्षजा
॥ णाधरस ॥ १४ ॥ नको काळवेळ
॥ यासिं ॥ रषिके विवितीतां ॥ १५ ॥
॥ सर्वसाधनाचे सार ॥ हानिधीर
॥ वेदाचा ॥ १६ ॥ नामासणे ते विमाता
॥ माझे संत मानिती ॥ १७ ॥ १८ ॥

॥ रामनामविणतों ॥ जैसाभां
॥ उबेलका ॥ १॥ कायकिजेयाचे
॥ इतान ॥ दृथाश्चानभुंकणे ॥ २॥
॥ काययाचेजालुछान ॥ बकध्या
॥ नचागळे ॥ ३॥ तुकासणेकाळा
॥ काग ॥ याचेजांगयाघरि ॥ ४॥ ५
॥ कुवंडिकरिनाकाया ॥ वरनिपा
॥ यागोलीरिया ॥ ६॥ बैसलेतेरप
॥ डोळा ॥ मनचाळागळे ॥ ७॥
॥ परतेनसरवेहरि ॥ जावडिपुरि
॥ बैसलि ॥ ८॥ तुकासणेविसाव

(७१)

॥ को॥ तेथेथाले धर्मावरि॥ ४॥ ७॥
॥ केलाते साजंगिकार॥ माझाभा
॥ रचालवि॥ १॥ होउआंत रायबुद्धी
॥ कृपानिधीने द्यावी॥ २॥ आशि
॥ तरिजउजिव॥ केचाभाव पुरता॥
॥ ३॥ आनन्यभाव द्यावी सेवा॥
॥ आत्मा देवाद्यउसि॥ ४॥ तुमि
॥ आमी गराणां गते॥ कृपावंत
॥ रसिजे॥ ५॥ लुका मणभाकुंकी
॥ व॥ आसां जीवजउआमि॥ ६॥
॥ ७॥ लुकाराम॥ ८॥
॥ आतां देवामो कलिके॥ तुम्हा म
॥ ले दिसना॥ ९॥ आतां नाही जिय

(९)

॥ भाव ॥ उरलाठाववेगळा ॥ २ ॥ सां
॥ आळुनिध्यावेदेवा ॥ आपणस
॥ वायावरि ॥ ३ ॥ लुकासणेनग्नभा
॥ ज ॥ तरिलाजखामिसि ॥ ४ ॥ ९ ॥
॥ पसरोनीगहिलोवाडे ॥ सोईजा
॥ होतुमचीय ॥ ५ ॥ आंतांयावेला
॥ गवेगे ॥ पांडुरंगेधांवत ॥ ६ ॥ खे
॥ सायाचिइछाकडे ॥ चालिखउ
॥ रूपति ॥ ७ ॥ लुकासणेकपाकु
॥ वा ॥ करणेसेवालागली ॥ ८ ॥
॥ ९ ॥ १० ॥ मागणेतेयेकद्या
॥ वे ॥ निरंतरयावेजागरण ॥ ११ ॥

॥ हरिदासाचा संगवरा ॥ आकड
 ॥ नाचवा गाठु गीती ॥ १ ॥ जो नाचु
 ॥ उतपतिर्थदानी ॥ तो कीर्तनीना
 ॥ चतसे ॥ ३ ॥ जनार्दनचा येका
 ॥ झणों ॥ नीरतर येणो जागरणां ॥
 ॥ ४ ॥ ११ ॥ राम ॥
 ॥ सावध जाला सावध जालों ॥ हरि
 ॥ व्याजालों जागरा ॥ १ ॥ तेथे वे
 ॥ ष्ठाचा भार ॥ जय जय कार
 ॥ होत असं ॥ २ ॥ झणो नियांगेलि
 ॥ झोप ॥ होते पाप जाडते ॥ ३ ॥ तु
 ॥ का झणे तया ठायं ॥ वळे छाया

(९)

॥ छपेवि ॥ ४॥ १३॥ २५॥
॥ ब्रीदल्याचेजगदानी ॥ तोचिम
॥ निस्मरावा ॥ १॥ समपायकर
॥ कटि ॥ उभातटिमिवेरच्या ॥ २॥
॥ पाहिलीयावेधलावी ॥ वैसेजी
॥ बीजपेनि ॥ ३॥ तुकासणेन
॥ लीकाजा ॥ धावेलाजालवळ
॥ हि ॥ ४॥ १३॥ २५॥ ३०२५॥

॥ ४॥ १३॥ २५॥ ३०२५॥
॥ ४॥ १३॥ २५॥ ३०२५॥
॥ ४॥ १३॥ २५॥ ३०२५॥
॥ ४॥ १३॥ २५॥ ३०२५॥

ऐतैरगमस्येधमनरागीपावधर्गागमरम

अकाशगीधायोयधनुपछामगपांपोनीतिपा

उयापक्षिणिगातान्माअकक्षननरागीक्ष

रधमपीःगिखिवाहमहापागीगाक्ष

धूरिपमरागीधमरधमधरापुतगात्याप

भध्यापपक्षमःगीकरासभगिभमःपुधु

पपपुमरःभरपीशायरपुःगिद्धरधमभर

भधीक्षगसपेच्छराआक्षंममसाद्यभम

तःसवभक्तानायापाद्यतिःद्वेगिनायार्म

गः गभ्रा उद्युभागेत गः लद्यतीभर्गः प

पद्येभच्छरीरे गः गभ्रस्तेषां गेवरीः प

धभ्रमपदरीः गिद्धाघ्नेभ पः दरेपलाभ

इक्षपः ३ः अद्विपेद्यमपः भधीमप

उद्वरः धवनापुनाल लनातमः घेपडा

पामधीपः शायरास्त्रायः भधी

स्मरतीनायः गिद्धाघ्नेपास्तरेणः भ

कीचउरमेपीनदः नागाममघेताधी

पयदरेन नातिघाय परायापरीः ३

होयस्मरणः स्मरणाः भस्मस्मरणः भस्म
 रत्नाभरीताकउरुताद्वज्रगोधक
 वेभरघरीछवः धार्धर्हाभस्मियाः रिम
 चाद्वरीगावर्तद्वापदः वाः नद्वज्रयाधम्पद्वगमं
 तोरिभस्मकायाः धताद्वेगभस्मियाः केतेध्वद्वान्न
 चोः॥ हम्पगावर्तद्वापदः वाः नद्वज्रयाधम्पद्वगमं
 गावर्तद्वापदः वाः नद्वज्रयाधम्पद्वगमं
 र्गिनचुम्पद्वापदः वाः नद्वज्रयाधम्पद्वगमं
 रः भचतातेद्वरमरीः भारपताद्वज्रभारी
 भिभतरीधर्धः धपदाधर्धधर्धः द
 कपरीधर्धः धपदाधर्धधर्धः द

पुनरुत्पत्तिः पाद्योपहारीयगणदि

~~ਫਰੀਜ਼ ਨਾਮ ਰਾਇ: ਚੰਨੀਆਰੀ-ਬਾਬ~~

~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥~~

295 ~~नाथः वीपनापन घर ४४ नमो ४४~~

~~प्रांतिः प्रजापतिः प्रजापतिः~~

~~गणेश्वरारामदासपुत्रगणेश्वर~~

पद्मिनीरामछारीदिपुत्रभद्रपायार

~~मांमराप्राप्तद्विता-यस्यदोषतोषात्~~

रणिभगवत् ॥ १॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com